रिपोर्ट

मूलनिवासी सभ्यता संघ द्वारा सांची, मध्य प्रदेश में तीन दिवसीय द्वितीय राष्ट्रीय महासंगीति का सफलतापूर्वक आयोजन

रिपोर्ट : मंगल चंद हांसदा

मूनिटा संवाददाता, सांची, मध्य प्रदेश : मूलनिवासी सभ्यता संघ की ओर से होटल संबोधि इंटरनेशनल, सांची, मध्य प्रदेश में 25 से 27 अक्टूबर 2025 को द्वितीय राष्ट्रीय महासंगीति का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इसमें भारत के विभिन्न राज्यों से प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। जिसमें दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र मुख्य रूप से शामिल थे। महासंगीति में अनेक भांति के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, कलाचारिक, फिल्म प्रदर्शन, नाटक प्रस्तुति और साहित्यिक चर्चाएं। 25 अक्तूबर 2025 (शनिवार) को महासंगीति की शुरुआत संविधान गीत के कोरस गान से हुई। संगीति के उद्घाटन के लिए अद्भूत तरीका अपनाया गया। उद्घाटन का मंच मुख्य पंडाल से अलग बनाया गया। जहां ब्राह्मणवादी सामाजिक परंपरा के प्रतीक चार मटके बड़े से छोटे आकार में एक-दूसरे के ऊपर रखे गये थे, जो शोषककारी वर्ण व्यवस्था के प्रतीक थे, जिन्हें मुख्य उद्घाटक मूलनिवासी शैलेश नरवाडे (फिल्म निर्देशक, जयंती), मुख्य अतिथि एडवोकेट गुरु प्रसाद मदन (उच्च न्यायालय, प्रयागराज), मूलनिवासी सीमा बाबू सिंह वास्कले (राष्ट्रीय प्रभारी जयस, बड़वानी), विशिष्ट अतिथि मूलनिवासी आर. एल.ध्रुव (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ), मूलनिवासी सुनील कुमार (राष्ट्रीय अध्यक्ष, मूलनिवासी सभ्यता संघ), एडवोकेट के. एस. चौहान (वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली), डॉक्टर दीपा श्रावस्ती (केंद्रीय कार्यकारिणी, सदस्य, बामसेफ), प्रोफेसर नीलिमा बागडे (केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ), मूलनिवासी शर्मिष्ठा गौतम (केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ), डॉक्टर पी. कोमल एवं मूलनिवासी उमेश पटेल (राज्य कार्यकारिणी सदस्य, मध्य प्रदेश, बामसेफ) के द्वारा लाठी से फोड़कर उद्घाटन किया। इसके बाद सभी ने मिलकर समतामूलक आदर्श समाज का प्रतीक नया मटका बनाया गया। उद्घाटन सत्र का मंच संचालन मूलनिवासी अरुणा तिरपुडे (राष्ट्रीय महासचिव, मूलनिवासी सभ्यता संघ) द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र में ही साहित्यिक वेबसाइट और वेब पत्रिका 'बेगमपुरा : सभ्यता का आह्वान' का बामसेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मूलनिवासी आर. एल.

ध्रुव के हाथों लोकार्पण भी किया गया।

साहित्य के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करने के लिए 'जीवन गौरव सम्मान' से डॉ. तारा परमार, मध्य प्रदेश को सम्मानित किया गया। रचनाकर्म के आधार पर पुरस्कार के लिए डॉ. कुसुम वियोगी को 'प्रेरक दलित कहानियां' (दिल्ली) तथा कोरवा भाषा शब्दकोश के लिए मा. हीरामन कोरवा को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में दौरान श्साहित्य का आंदोलन : आंदोलन का साहित्य' पर चर्चा में बीज भाषण डॉ. राजेंद्र कुंभार (महाराष्ट्र) ने किया। सहवक्ता के तौर पर मू. शीलबोधि ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम में एक सत्र दलित, आदिवासी, ओबीसी और महिला साहित्य पर रखा गया तथा जिसमें बहुजन साहित्य के औचित्य पर चर्चा रखी गई। इस कार्यक्रम में प्रो. श्यायमसुंदर मिरजकर ने अपना मुख्य् वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में तीन पुस्तकों पर चर्चा भी रखी गई जिसमें डॉ. रविंद्र श्रावस्ती ने डॉ. आ. ह. साळुंखे की पुस्ततक 'सर्वोत्तम भूमिपुत्र गौतम बुद्ध' पर अभिभाषण दिया, दूसरी पुस्तक मा. रूपनारायण सोनकर की आत्मरकथा 'नागमणि' पर प्रो. गोरख एन बनसोडे ने अभिभाषण दिया तथा मा. हितेश शाक्य की पुस्तक 'बुद्ध का मार्ग ही श्रेष्ठ क्यों' पर अभिभाषण मा. दिनेश बौद्ध ने दिया। साहित्य के कार्यक्रम में चर्चा के विषय 'अवधारणा की स्थापना में साहित्य की भूमिका' पर प्रो. नीलिमा बांगड़े, ईशकुमार गंगानिया व डॉ. कुसुम वियोगी आदि ने अपनी बात रखी। साहित्य के साथ सामाजिक विषय पर भी चर्चा रखी गई जिसमें भारतीय की 'प्राचीन कुल चिह्न समाज रचना' और 'कुलनाम' : उत्पत्ति और उद्विकास पर अपना विशेष व्याख्यान मा. राजेंद्र बाबू ढोके ने रखा तथा सहवक्ता के रूप में एड. मोनिका थी। महासंगीति में साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन ने गंभीरता प्रदान की।

कलाचारिक सत्र का आगाज झारखंड राज्य से आए मूलनिवासी लालधन नायक और साथी द्वारा बांसुरी की मनमोहन तान, मादल की थाप और नगाड़े की गूंज से की गई। कलाचारिक सत्र में देश के विभिन्न राज्यों से आए हुए प्रतिनिधियों द्वारा विशेष प्रस्तुति हुई, जिसमें हरियाणा से डॉक्टर रतन कौर का नृत्य एवं मूलनिवासी गोपाल कश्यप के गीत, दिल्ली से मूलनिवासी अवधेश कुमार साधक के गीत एवं मूलनिवासी महेश कुमार पासवान के ढपली वादन, पंजाब से प्रगति कला केंद्र, जलालाबाद द्वारा नाटक प्रदर्शन एवं शेहरीया थिएटर ग्रुप, गुरदासपुर द्वारा नृत्य, महाराष्ट्र से धनगरी ढोल-ओवी, कोल्हापुर एवं लोककवि चंद्रकांत झुंझार के गीत, उत्तर प्रदेश से मूलनिवासी अहेम सिंह के गीत और मध्य प्रदेश से आदिवासी नृत्य एवं कबीर साहेब के भजन का संगायन हुआ। मुख्य आकर्षण झारखंड राज्य की ओर से दिखाई गई नाटक 'कब तक' रहा, इसके निर्देशक मूलनिवासी जीतराय हांसदा थे।

लोककवि वमन दादा कर्डक सभागार में कई कलाचारिक कार्यक्रम के साथ-साथ विशेष सभ्यता संवाद किया गया। इसमें मूलनिवासी आर. एल. ध्रुव (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ), मूलनिवासी आर. एस. राम (केंद्रीय कार्यकारिणी, बामसेफ), मूलनिवासी सुरेश द्रविड़ (केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य बामसेफ), एडवोकेट के. एस. चौहान (वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली) मूलनिवासी हेमराज पटेल (केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य, पावर विंग) ने विशेष भूमिका निभाई।

फिल्म महोत्सव में विशेष मूलनिवासी फिल्मकारों की फिल्म की स्क्रीनिंग की गई जिसमें प्रमुख फिल्म व फिल्मकारों ने भाग लिया, उलगुलान फिल्म स्टूडियो में निर्देशक मूलनिवासी कैलाश चंद की फिल्म 'कल्लू गांधी' निर्देशक मूलनिवासी सोमनाथ वागमारे की फिल्म 'गाय और भारत' फिल्म

'ओरिजिन' निदेशक एवा दुवने, निर्देशक थरुन थंकाचन की फिल्म "Beyond the Unwritten", निर्देशक राम दास की फिल्म "Sathyappullu", निदेशक के. एस. किरण की फिल्म "Danshur" का प्रदर्शन किया गया।

महासंगीति के गुरु घासीदास सभागार में 'युवा अनुसंधान कारवां' का आयोजन किया गया। युवा शोधार्थियों द्वारा विभिन्नत सामाजिक विज्ञान विषयों में विषय विशेषज्ञ मू. के एस चौहान, मू. आर एस राम, प्रो. नीलिमा बागड़े के समक्ष प्रस्तुत किये गए। दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग से मू. शिव पीलवान, दिल्ली विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग से पी.एचडी शोधार्थी मू. वैभव खरात, दारून हूदा इस्लोमिक विश्व विद्यालय से हसनूर इस्लाम, मदरसा तूल फरीया, पश्चिम बंगाल से ए के शराफत, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक से हेमचंद खोबर्डे, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति अनुभाग से मानव गावडे ने अपने-अपने शोधपत्र का वाचन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं को सामाजिक परिवर्तन हेतु अनुसंधान के लिए प्रेरित करना था।

अजंता कला दालन में चित्रकला और शिल्पकला का विशेष प्रदर्शनी लगाई गई । इसमें मूलनिवासी नंदकुमार जोगदंड (प्रसिद्ध चित्रकार), मूलनिवासी महेंद्र खाजेकर (प्रसिद्ध रंगोलीकार एवं चित्रकार), मूलनिवासी ज्योति अबूटे (प्रसिद्ध शिल्पकार), मूलनिवासी अंकुश बनसोडे (प्रसिद्ध चित्रकार एवं रंगोलीकार) ने विशेष भूमिका निभाई।

सभी राज्यों के प्रतिनिधियों ने राज्यवार कलाचारिक झांकी का आयोजन जलूस में किया। यह जलूस बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर की मूर्ति, सांची से सांची स्तूप तक अपने-अपने राज्यों के पारंपरिक वेशभूषा और गीत-संगीत के साथ निकाला गया, जो उत्कृष्ट सभ्यता रैली के रूप में सुशोभित हो रही थी।

मुख्य पंडाल में पंजाब राज्य द्वारा प्रस्तुत नाटक 'बाबासाहेब' और दिल्ली राज्य द्वारा प्रस्तुत नाटक 'गुलामी' का मंचन किया गया। शाम को प्रख्यात फूले-अंबेडकरवादी रैप गायक विपिन तातड और साथियों की प्रस्तुति मुख्य आकर्षण रही।

कलाचारिक प्रस्तुति के साथ विशेष प्रस्तुति के लिए विभिन्न राज्यों के कलाकारों एवं प्रतिनिधियों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। समापन सत्र में मूलनिवासी सुनील कुमार (राष्ट्रीय अध्यक्ष , मूलनिवासी सभ्यता संघ) द्वारा लोगों को संघ की ओर से विशेष संदेश दिया गया। अंत में मूलनिवासी अजय कुमार मांझी (राज्य अध्यक्ष, मूलनिवासी सभ्यता संघ, मध्य प्रदेश) द्वारा लोगों का आभार व्यक्त किया गया और कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।

शेष भाग पृष्ठ 65

लगता है कि तुमने शायद अभी तक काम नहीं किया है समाज में उतरकर; इसलिए तुम समाज को ठीक से नहीं समझती हो। अभी तुम्हें बहुत कुछ सीखने की जरूरत है! लगता है कि तुम्हारे पास केवल कागजी-डिग्रियाँ ही हैं, समाज की समझ नहीं है तुम्हें। अब तुम यहाँ आ ही गई हो, तो मैं ध ीरे-धीरे सब सिखा दूँगा। तुमने अभी तक केवल यूनिवर्सिटी में काम किया है, और मैं जानता हूँ कि वहाँ कितना और क्या काम होता है। असली काम तुम यहाँ देखोगी और वह मैं तुम्हें सिखाऊँगा, इसलिए अभी तुम केवल चुपचाप देखा करो, मेरे काम में टाँग अड़ाने या ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है, जैसा तुमने आज किया! समझी? एनजीओ में अलग तरीके से काम होता है, यदि तुम्हें यहाँ रहना है, तो तुम्हें कुछ भी बोलने की बजाय जैसा मैं कहूँगा, वैसा ही करना होगा! तुम समझ ही रही होगी कि मैं क्या कह रहा हूँ।" एक साँस में सुरेश बहुत-सी बातें कह गया। उसके आहत अभिमान ने सुनीता को उसकी 'हैसियत', बतौर महिला और बतौर नई कर्मचारी,समझाते हुए और संस्था में अपनी ताकत का एहसास कराते हुए अपना फैसला सुना दिया। सुनीता अब इस संस्था में आने को लेकर असमंजस में पड़ चुकी थी, 'एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल एंडइक्वेटेबल सोसाइटी' का नारा बुलंद करनेवाली यह संस्था किस तरह की 'सस्टेनेबल सोसाइटी' बनाने की कोशिश में है? क्या कोई समाज ऐसे ही 'सस्टेन' करेगा, जिसमें वंचित तबका अपने विरुद्ध हो रहे अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सतत खमोशी की चादर ओढ़े रहे और सुरेश जैसे लोग 'समाज-सेवक', 'समाज-सुधारक' का चमकदार मुखौटा पहने हुए उन बेबस इंसानों के कल्याण के नाम पर अपनी मोटी कमाई करते हुए शान से घूमते रहें?❑